19

ग्रामीण नेतृत्व

[RURAL LEADERSHIP]

समाज की शक्ति संरचना में नेतृत्व का प्रमुख स्थान है। नेता ही राजनैतिक संगठन और शक्ति संरचना को जीवन, दिशा और प्रवाह प्रदान करते हैं। नेतृत्व के अध्ययन के बिना हम राजनैतिक संगठनों और संरचनाओं की 'प्रकार्य प्रणाली' नहीं समझ सकते। अतः स्वभावतः समाज-वैज्ञानिकों ने अपना ध्यान नेता और अभिजात वर्ग के अध्ययन की ओर लगाया है। नेता की योग्यता व क्षमता पर शक्ति का सदुपयोग और दुरुपयोग निर्भर करता है। **जे. बी. चिताम्बर**[1] का मत है कि प्रत्येक समाज की शक्ति संरचना में कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो लोगों को प्रोत्साहित करते हैं, प्रेरणा देते हैं। मार्ग-दर्शन करते हैं अथवा लोगों को क्रिया करने के लिए प्रभावित करते हैं। ऐसी क्रिया को हम नेतृत्व और ऐसे व्यक्तियों को हम नेता, शक्ति धारण करने वाले, शक्ति मानव, शक्ति केन्द्र और शक्ति अभिजात कह सकते हैं। ऐसे व्यक्ति समूह के अन्य लोगों से अपनी भूमिका, प्रभाव और सामाजिक शक्ति के कारण ही भिन्न होते हैं। नेतृत्व एक सार्वभौमिक एवं विश्वव्यापी घटना है। जहां भी नेता है वहां समाज है और जहां भी समाज है वहां नेतृत्व है। व्यक्ति की प्रतिभा और सामाजिक परिस्थितियां मानव में नेतृत्व के भाव जाग्रत करती हैं। प्रभाव और प्रभुत्व ने भी नेतृत्व को जन्म दिया है।

वर्तमान में नेतृत्व से सम्बन्धित अनेक अध्ययन हुए हैं जो राजनीतिज्ञों, मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों द्वारा किये गये। इनका सम्बन्ध नेतृत्व की परिभाषा, उत्पत्ति, सिद्धान्त, कार्य, विशेषताओं और स्रोतों को ज्ञात करने से रहा है। हमारा ध्येय यहां ग्रामीण नेतृत्व का उल्लेख करना है और यह जानना है कि ग्रामीण नेतृत्व क्या है? हमारी प्रदत्त समाज-व्यवस्था उभरते नेतृत्व को कैसे प्रभावित कर रही है? उभरते नेतृत्व की क्या विशेषताएं हैं? स्थानीय नेतृत्व राज्य स्तर व राष्ट्रीय स्तर के नेतृत्व से किस प्रकार से भिन्न है। देश की राजनीतिक

---

1 "Within the power structure of every society certain vital, integral individuals operate within groups to promote, stimulate, guide or othewise influence members to action. Such activity has been called leadership, the individuals have been referred to as leaders, power holders, men of power, power-centres and power elite."

—J. B. Chitamber, *op. cit.*, 19[illegible]

...में नेतृत्व की क्या भूमिका है? परम्परात्मक नेतृत्व की विशेषताएं क्या थीं और वर्तमान ...उससे किन रूपों में भिन्नता लिए हुए है। वे कौन-सी शक्तियां हैं जिन्होंने परम्परात्मक ...नेतृत्व के स्थान पर नवीन नेतृत्व को जन्म दिया है? भारतीय ग्रामों में हुए नेतृत्व से ...अध्ययनों से क्या निष्कर्ष निकलते हैं, आदि। इससे पूर्व कि हम ग्रामीण नेतृत्व के ...पक्षों का विश्लेषण करें नेतृत्व की अवधारणा को यहां स्पष्ट करेंगे।

नेतृत्व की अवधारणा
(CONCEPT OF LEADERSHIP)

वेबस्टर (Webster) नेता को एक मार्ग-दर्शक, एक चालक, एक मुखिया, एक आज्ञा ...वाला, एक दल अथवा सम्प्रदाय का मुखिया, व्यवहार, मत तथा कार्य में आगे जाने वाला ...द्वारा जिसका अनुगमन किया जाता हो, आदि विभिन्न रूपों में परिभाषित करते हैं।[1] ...परिभाषा नेतृत्व की विभिन्न सम्भावनाओं को प्रकट करती है।

जर्मन राजनीतिशास्त्री **रिचार्ड श्मिट** नेतृत्व को परिभाषित करते हुए लिखते हैं, "कुछ ...हितों के लिए एक व्यक्ति एवं समूह के बीच बनने वाले सम्बन्ध तथा इस प्रकार से ...व्यवहार किया जाना जो उसके द्वारा निर्धारित हो।"[2]

लेपियर तथा फॉर्न्सवर्थ के अनुसार, "नेतृत्व वह व्यवहार है जो दूसरे व्यक्तियों के व्यवहार को उससे कहीं अधिक प्रभावित करता है, जितना कि उन दूसरे लोगों का व्यवहार ...नेता को प्रभावित करता है।"[3]

टीड (Tead) के अनुसार, "नेतृत्व किसी लक्ष्य के लिए जिसको वे वांछनीय मानते ...सहयोग करने के लिए जनता को प्रभावित करने की क्रिया है।"[4]

...नेतृत्व की विशेषताएं (Characteristics of Leadership)

उपर्युक्त परिभाषाओं से नेतृत्व की चार प्रमुख विशेषताएं स्पष्ट होती हैं वे हैं—नेता, अनुगामी, परिस्थिति एवं कार्य (Leader, Followers, Situation and Task)।

नेता—प्रत्येक समूह का एक नेता होता है जो समूह के लोगों के साथ विभिन्न समय ...अन्तःक्रिया करता है और उनसे सम्बन्ध स्थापित करता है। वह समह के लिए विभिन्न प्रकार ...कार्य करता है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि जिस प्रकार के कार्य नेता करता है, समूह ...दूसरी व्यक्ति नहीं कर सकते। नेतृत्व का कार्य समूह के सदस्यों में विभाजित किया जाता ...किन्तु विशिष्ट रूप से उन्हें पूरा करने का भार नेता पर ही होता है। किसी भी समूह के ...नेता की पहचान करने की अनेक विधियां हैं जिनमें से समाजमिति (Sociometry) भी एक

1. "Webester defines a leader variously as a guide, a conductor, a chief, a commander, as the head of a party or sect and as one who precedes and is followed by others in conduct, opinion, and undertakings."—Quoted by D. Mackenzie Brown, "Traditional Concepts of Indian leadership" in *Leadership and Political Institutions in India*, ed. by L. Park and I.Tinker, p. 3.

2. "The relation between an individual and a group built around some common interest and behaving in a manner directed or determined by him."

—Richards Schmdit, quoted by Mackenzie Brown, *Ibid*, p. 3.

3. "Leadership is behaviour that affects the behaviour of other people more than their behaviour affects that of the leader."

—R. T. Lapiere and R. R. Farnsworth, *Social Psychology*, p. 257.

4. "Leadership is the activity of influencing people to co-operate to some goal which they ca... —...Tead, *The Art of Leadership*.

है। नेता अधिक कुशल, योग्य, अनुभवी एवं बुद्धिमान होता है, इसलिए वह समूह में अन्य व्यक्तियों की तुलना में अधिक प्रभावी होता है।

अनुगामी—समूह में नेता के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति होते हैं जो नेता का अनुगमन करते हैं, उन्हें हम अनुगामी कहते हैं। बिना अनुगामी के कोई नेता नहीं हो सकता (We cannot think of Leader without followers.)। अतः जब तक ऐसे कुछ व्यक्ति नहीं होंगे जो एक व्यक्ति की आज्ञा मानें अथवा उसका अनुगमन करें तब तक नेतृत्व उत्पन्न नहीं होगा। सामान्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि नेता एवं अनुगामियों में सक्रिय अन्तःक्रिया हो। उद्देश्य की प्राप्ति एवं आन्दोलन के लिए यह भी आवश्यक है कि अनुगामी नेता का नेतृत्व स्वीकार करें और नेता अनुगामियों की अपेक्षाओं के अनुसार कार्य करें। अनुगामी अपने नेता के व्यवहार से अधिक प्रभावी होते हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि अनुगामी का अपने नेता के व्यवहार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। किन्तु प्रभाव सापेक्ष रूप में देखा जा सकता है। नेतृत्व उभयपक्षीय (दुतरफा) मामला है (Leadership is a two-way affair)। किन्तु पारस्परिक प्रभाव की मात्रा में अन्तर होता है।

परिस्थिति—नेता और अनुयायी किसी परिस्थिति में ही अन्तःक्रिया करते हैं। परिस्थिति में हम मूल्यों एवं अभिवृत्तियों (Values and attitudes) को सम्मिलित करते हैं। नेता एवं उसके अनुगामियों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सामाजिक मूल्यों एवं अभिवृत्तियों को ध्यान में रखकर ही योजना बनानी होती है। हम परिस्थिति में कुछ पक्षों को गिन सकते हैं, जैसे—(i) समूह के लोगों के पारस्परिक सम्बन्ध, (ii) समूह की एक इकाई होने के नाते विशेषताएं (iii) समूह के सदस्यों की संस्कृति की विशेषताएं, (iv) भौतिक परिस्थितियां जिनमें समूह को क्रियाशील होना है, (v) सदस्यों के मूल्य, अभिवृत्तियां एवं विश्वास आदि। परिस्थिति का समूह के नेतृत्व-निर्धारिण में महत्वपूर्ण प्रभाव होता है।

कार्य—कार्य से तात्पर्य उन क्रियाओं से है जो कि समूह द्वारा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सामूहिक रूप से किये जाते हैं। कार्य को पूरा करने के लिए नेता से विभिन्न प्रकार की क्षमताओं की अपेक्षा की जाती है। कार्य की प्रकृति नेता को कार्य करने के लिए प्रेरणा प्रदान करती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि नेतृत्व में नेता, अनुयायी, परिस्थिति और कार्य चार महत्वपूर्ण पक्ष हैं। नेतृत्व किसी एक अथवा कुछ का विशेषाधिकार नहीं कहा जा सकता। इस सम्बन्ध में **लूथर** एवं **बर्नार्ड** कहते हैं, "कोई भी व्यक्ति जो साधारण लोगों की तुलना में दूसरों को सामाजिक-मनोवैज्ञानिक प्रेरणा प्रदान करने में दक्ष हो और सामूहिक प्रत्युत्तर को प्रभावी बना देता हो, वह नेता कहा जा सकता है।"[1] नेतृत्व को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने के लिए हम उसके कुछ महत्वपूर्ण पक्षों पर विचार करेंगे।

(i) **औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रभावों की दृष्टि से नेतृत्व में भेद पाया जाता है, किन्तु नेतृत्व की परिस्थिति में दोनों ही पक्ष सम्मिलित होते हैं।** एक औपचारिक परिस्थिति में जो व्यक्ति नेता होता है वह अनौपचारिक में भी हो सकता है और उसके विपरीत स्थिति भी हो सकती है जब एक अनौपचारिक नेता औपचारिक व प्रभावी नेता की उपस्थिति में प्रभावहीन हो।

1 Luther and Bernard, *Introduction to Social Psychology*, p. 520.

(ii) **नेतृत्व का निर्धारण मात्रा** (degree) **के सन्दर्भ में ही सम्भव** है। एक व्यक्ति विभिन्न समय में और विभिन्न परिस्थितियों में नेतृत्व की अलग-अलग मात्रा को प्राप्त कर सकता है। नेतृत्व समूह अथवा समाज के लोगों में विभिन्न मात्रा में विभाजित और वितरित हो सकता है। एक ही व्यक्ति सभी स्थितियों एवं समय में नेतृत्व करे, यह आवश्यक नहीं। अलग-अलग समय एवं परिस्थिति में नेता बदल सकते हैं।

(iii) **जो व्यक्ति नेतृत्व करते हैं उनमें कार्य को पूरा करने की प्रभावी योग्यता एवं क्षमता होती है।** विभिन्न कार्यों को पूरा करने तथा विभिन्न समय एवं परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग गुणों वाले नेताओं की आवश्यकता होती है। इसलिए ही एक व्यक्ति सभी परिस्थितियों में नेतृत्व नहीं कर सकता।

(iv) **नेतृत्व की विशेषताएं व्यक्तिगत होती हैं वंशानुगत नहीं।** नेतृत्व जिस परिस्थिति में क्रिया जा रहा है उससे सम्बन्धित होता है। यही कारण है कि एक व्यक्ति किसी एक परिस्थिति में नेता होता है वही दूसरी में नहीं।

(v) **नेतृत्व केवल प्रतिष्ठा, पद और क्षमता से ही सम्बन्धित नहीं है, वरन् इसका सम्बन्ध सफलतापूर्ण ढंग से कार्य को पूरा करने से भी है।** अगलग नेता की कोई भी गतिविधि दिखाई नहीं देती है तो हम कहेंगे कि नेतृत्व बड़ा कमजोर है।

(vi) **नेतृत्व में सामाजिक अन्तःक्रिया सम्मिलित है** जो समूह के सदस्यों में परस्पर तथा नेता और अनुयायियों के बीच और व्यक्ति तथा समूहों के बीच होती है। **पिगर** (Pigor) का कहना है कि नेतृत्व पारस्परिक उत्तेजना की प्रक्रिया है (Process of mutual stimulation)।

(vii) **नेता का समूह में केन्द्रीय स्थान होता है।** कई बार नेता बिना अपने अनुयायियों के सुझाव से ही समूह के लिए कई क्रिया-कलाप प्रारम्भ करता है।

(viii) **नेतृत्व का प्रभाव यह होता है कि सारे समूह द्वारा सामूहिक रूप से क्रिया की जाती है।**

(ix) **नेतृत्व की प्रकृति संचयी है।** एक व्यक्ति जब किसी परिस्थिति में अपनी भूमिका निभाता है तो उस पर अनेक प्रकार के दबाव आते हैं।

(x) **नेतृत्व औपचारिक अथवा अनौपचारिक हो सकता है।** समाज की शक्ति संरचना में औपचारिक नेतृत्व का प्रभाव अनौपचारिक नेतृत्व की तुलना में कम होता है।

(xi) नेतृत्व का क्षेत्र विस्तृत होता है। एक छोटे समूह की क्रियाओं को निर्देशन देने से लेकर सम्पूर्ण राष्ट्र की गतिविधियों तक नेतृत्व का क्षेत्र व्याप्त होता है।

परम्परात्मक ग्रामीण नेतृत्व को निर्धारित करने वाले कारक
(FACTORS CONTRIBUTING TO TRADITIONAL LEADERSHIP)

हमने ऊपर नेतृत्व की सामान्य विशेषताओं का उल्लेख किया है। ग्रामीण क्षेत्र में नेतृत्व विशिष्ट प्रकृति का पाया जाता है। गांवों में परम्परात्मक नेतृत्व के निर्धारण में निम्नांकित कारक महत्वपूर्ण हैं :

(1) **आयु का महत्व** (Importance of Age)—गांव में नेता होने के लिए आयु के महत्व को स्वीकार किया जाता है। सामान्य धारणा यह है कि बड़ी आयु का व्यक्ति अनुभवी होता है। अतः अधिकांशतः बुजुर्ग एवं अनुभवी व्यक्ति ही गांव में नेता माने जाते हैं। उन्हें श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। साधारणतः ऐसी मान्यता है कि वयोवृद्ध व्यक्ति

परम्पराओं के रक्षक होते हैं। नेतृत्व से सम्बन्धित किये गये अनेक अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि गांवों में आज भी नेतृत्व में आयु एक महत्वपूर्ण कारक है।

(2) **बड़े परिवार का महत्व** (Importance of Large Family)—ग्रामीण नेतृत्व का सम्बन्ध बड़े परिवारों से भी है। गांव में ऐसे परिवारों का सम्मान किया जाता है जिसमें तीन-चार पीढ़ियों के सदस्य संयुक्त रूप से निवास कर रहे हों। बड़ा परिवार होने पर परिवार के एक या दो सदस्य ऐसे भी हो सकते हैं जो नेतृत्व का कार्य करें और शेष सदस्य कृषि, व्यापार, उद्योग, सरकारी नौकरी, आदि में लगे रहें। बड़े परिवार के रिश्तेदार भी अधिक होंगे और उन सभी का भी नेता को सहयोग प्राप्त होगा। परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा एवं नाम भी नेतृत्व के निर्धारण में महत्वपूर्ण कारक है।

(3) **आर्थिक स्थिति** (Economic Status)—गांव में अधिकांशत: परम्परागत नेतृत्व उन्हीं लोगों के हाथों में था जिनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ थी। चूंकि आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न व्यक्ति ही समय पर लोगों को सहायता दे सकते थे, इसलिए गांव में भूस्वामियों और साहूकारों का अधिक प्रभाव रहा है। साहूकार कई लोगों को ऋण देकर तथा भू-स्वामी अपनी जमीन पर मजदूरी प्रदान कर लोगों पर अपना प्रभाव और प्रभुत्व बनाये रखते थे। ऋण प्राप्त करने वाले एवं कृषि मजदूर इन साहूकारों एवं भू-स्वामियों के अधीन होते थे। बड़े जमींदार का प्रभाव भी अधिक होता था। इस प्रकार भूमि की मात्रा और सम्पत्ति भी नेतृत्व के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक रहा है।

(4) **शिक्षा** (Education)—गांव में अशिक्षा के कारण उन लोगों का महत्व बढ़ जाता था जो पढ़े-लिखे होते थे। ये शिक्षित व्यक्ति उन्हें मुकदमों में और बाह्य ज्ञान प्रदान करने, पत्र लिखने, सरकारी काम-काज तथा हिसाब-किताब समझाने में सहायक होते थे। अत: शिक्षित व्यक्तियों का गांवों में अधिक दबदबा होता था और ये व्यक्ति नेता के रूप में स्वीकार किये जाते थे।

(5) **प्रशासकीय कर्मचारियों से सम्पर्क** (Contact with Administrative officers)—गांव वालों का सम्पर्क प्रशासकीय कर्मचारियों से नहीं होता है। अत: वे ऐसे व्यक्ति को विशेष सम्मान की दृष्टि से देखते हैं जिसके सम्बन्ध तहसीलदार, कलेक्टर, पुलिस अधिकारियों और अन्य उच्चाधिकारियों से होते हैं। समय आने पर ऐसा व्यक्ति गांव वालों एवं उच्चाधिकारियों के बीच मध्यस्थता का कार्य करता है तथा सरकार से सम्बन्धित मामलों में वह गांव वालों की सहायता करता है। वही सरकारी मामलों में गांव वालों का प्रतिनिधित्व एवं नेतृत्व करता है।

(6) **कचहरी का ज्ञान** (Knowledge of Court Affairs)—गांव वालों में अधिकांश झगड़े सम्पत्ति, जमीन व स्त्री को लेकर चलते रहते हैं। किन्तु प्रत्येक व्यक्ति को कचहरी, वकील एवं न्याय की सरकारी प्रक्रिया का ज्ञान नहीं होता है। जो व्यक्ति कचहरी के लोगों और वकीलों, आदि से सम्बन्ध एवं सम्पर्क रखता है, वह भी गांव में प्रतिष्ठित व्यक्ति समझा जाता है। ऐसे व्यक्ति की भी नेता बनने की अधिक सम्भावना रहती है।

(7) **उच्च जाति** (Higher Caste)—गांव में जाति-प्रथा का कठोर रूप पाया जाता है। अधिकांश नेता उच्च जातियों अथवा प्रभुत्वशाली जाति (Dominant Caste) के होते हैं। निम्न एवं अछूत जाति के व्यक्ति को उच्च जाति की तुलना में कम ही प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यद्यपि प्रत्येक जाति की एक जाति पंचायत होती है और जाति पंचायत का मुखिया भी

अपनी जाति सम्बन्धी विवादों का निपटारा करता है। वही उनका नेता माना जाता है। किन्तु कुछ मामलों में उच्च जाति की पंचायत के मुखिया की बात सभी जाति के लोग स्वीकार करते हैं और उसका निर्णय ही अन्तिम माना जाता है। गांव की सभी जातियों के लोग उसका नेतृत्व स्वीकार करते हैं।

(8) **वैयक्तिक गुण** (Individual Traits)—गांव में उस व्यक्ति के नेता बनने के अवसर अधिक होते हैं जो गांव के कार्यों में भाग लेता हो, जैसे—गांव में कुआं अथवा तालाब खुदवाने, दो गांवों के झगड़ों को सुलझाने आदि के कार्य में सक्रिय भाग लेता हो, जिसका आचरण संयत एवं सुसंस्कृत हो, जो बोलने तथा निर्णय देने की क्षमता रखता हो, दुनियादारी व लोगों का सामना करने वाला, उत्सवों एवं सार्वजनिक कार्यों में भाग लेने वाला हो।

ग्रामीण नेतृत्व की विशिष्ट विशेषताएं
(SPECIFIC CHARACTERISTICS OF RURAL LEADERSHIP)

ग्रामीण नेतृत्व की अपनी कुछ विशिष्टि विशेषताएं हैं जो अन्य प्रकार के नेतृत्व से भिन्न हैं। वे इस प्रकार हैं :

(1) ग्रामीण नेतृत्व में अनुयायियों पर नेता के व्यवहार का अधिक प्रभाव होता है न कि नेता पर अनुयायियों के व्यवहार का।

(2) ग्रामीण नेतृत्व में **अनुयायियों की नेता के प्रति स्वाभाविक समर्पण की भावना** पायी जाती है। डर एवं दबाव से नेतृत्व अधिक समय तक नहीं चलता, वरन् लोगों के सहयोग व सद्भाव पर ही नेता सफलतापूर्वक कार्य कर सकता है।

(3) **प्रत्येक नेता एक विशिष्ट स्थिति में ही नेता होता है।** वह सभी परिस्थितियों में नेतृत्व नहीं कर सकता है। एक जाति का मुखिया अपनी जाति पंचायत और जाति सम्बन्धी कार्यों में जाति के लोगों का नेता होता है, किन्तु वही व्यक्ति दूसरी जातियों के कार्यों में नेता नहीं हो सकता। इस प्रकार गांव में नेतृत्व जातियों में विभक्त दिखाई देता है।

(4) उच्च कोटि के नेता में जो विशेषताएं होती हैं जैसे आत्म-विश्वास, प्रेरणा-शक्ति तथा बुद्धि आदि उनकी ग्रामीण नेताओं से सामान्यतः अपेक्षा नहीं की जा सकती।

(5) **ग्रामीण नेतृत्व परम्परात्मक और वंशानुगत होता है।** जाति का पंच एवं परम्परागत ग्राम पंचायत में गांव का मुखिया, लम्बरदार तथा चौकीदार, आदि वंशानुगत और परम्परात्मक ही होते थे।

एक नेता के गुण
(ATTRIBUTES (TRAITS) OF A LEADER)

एक व्यक्ति के सफल नेता बनने के लिए उसमें अनेक शारीरिक एवं मानसिक विशेषताएं होनी चाहिए। ये विशेषताएं क्या हों, इस बात पर मनोवैज्ञानिकों में मतभेद है। **टीड** ने 10 सामान्य गुणों को एक नेता के लिए आवश्यक माना है। **ऑलपोर्ट** अच्छे नेता में 21 और **स्टार्ड** 31 गुणों को नेता के लिए वांछनीय मानते हैं। **वाइण्ड** ने 20 मनोवैज्ञानिकों द्वारा बताये गये नेता के 79 गुणों का उल्लेख किया है। **एम. एन. बसु** ने एक नेता में निम्नांकित 10 गुणों को आवश्यक माना है।[1] ये गुण अग्र प्रकार हैं :

[1] M. N. Basu, "The Role of Leadership in the life of an Individual', in *Leadership in India*, ed. by. L. P. Vidhyarthi, p. 67.

(i) नेता का व्यक्तित्व सुदृढ़ हो,

(ii) नेता दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने वाला हो,

(iii) नेता एक अच्छा वक्ता होना चाहिए क्योंकि वह अपने भाषण से भीड़ को अपने प्रभाव में लाता है,

(iv) नेता की अभिव्यक्ति स्पष्ट होनी चाहिए। उसकी मौखिक अभिव्यक्ति से लोग सरलता से आकर्षित हो जाते हैं,

(v) नेता को समूह मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञान होना चाहिए,

(vi) नेता ईमानदार होना चाहिए,

(vii) नेता में नैतिकता एवं दयालुता होनी चाहिए,

(viii) नेता में अपने आपको परिस्थितियों के अनुकूल ढालने की क्षमता होनी चाहिए,

(ix) नेता को सभी प्रकार की सूचनाओं से अवगत होना चाहिए,

(x) नेता अनेक हितों को लेकर चलने वाला होना चाहिए।

उपर्युक्त विशेषताओं के अतिरिक्त भी नेता में कुछ और गुणों की अपेक्षा की जाती है जो इस प्रकार से हैं :

(1) **शारीरिक गुण**—नेता शारीरिक दृष्टि से हृष्ट-पुष्ट होना चाहिए। **स्टागडिल** तथा **गोविन** की मान्यता है कि लम्बाई नेतृत्व का विशेष गुण है। **बेलिंग्रेथ, गोविन** तथा **पेट्रीज**, आदि ने अपने अध्ययन में पाया कि नेता भारी भरकम शरीर वाले थे। शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, सुदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला व्यक्ति नेता के रूप में अधिक पसन्द किया जाता है।

(2) **बुद्धिमान** (Intelligent)—एक नेता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह सामान्य लोगों की तुलना में अधिक बुद्धिमान हो। इसका कारण यह है कि कई बार विकट परिस्थितियों में उसे निर्णय लेना होता है। वह लोगों का मार्गदर्शन और नियन्त्रण करता है।

(3) **आत्म-विश्वास** (Self-confidence)—नेता में दृढ़ आत्म-विश्वास होना चाहिए। कई बार उसे संघर्षमय परिस्थितियों से जूझना होता है। अपने साहस एवं आत्म-विश्वास के आधार पर ही वह लोगों को अपने भाषण से आकर्षित करता है। **कॉक्स, ड्रेक** तथा **गिब**, आदि विद्वानों ने अपने अध्ययनों में पाया कि नेता अपूर्व आत्म-विश्वास से भरपूर थे।

(4) **सामाजिकता** (Sociability)—नेता व्यवहार-कुशल एवं सभी के साथ सम्बन्ध बनाये रखने वाला होना चाहिए। **गुड एनफ, कैटेल** तथा **स्टाइक, मूर** तथा **न्यू कॉम्ब**, आदि विद्वान सफल नेतृत्व के लिए व्यक्ति में सामाजिकता को आवश्यक मानते हैं।

(5) **संकल्प शक्ति** (Will power)—नेता में दृढ़ संकल्प शक्ति होनी चाहिए। अनेक विद्वानों ने अपने अध्ययनों में यह पाया कि नेता की संकल्प शक्ति सामान्य लोगों की तुलना में कहीं अधिक थी। संकल्प शक्ति के आधार पर व्यक्ति निर्णय लेने, उत्तरदायित्व निभाने और आत्म-संयम बनाये रखने के योग्य होता है।

(6) **परिश्रमी** (Deligent)—नेता बनने के लिए आवश्यक है कि वह परिश्रमी हो। कठोर परिश्रम एवं लगन के कारण ही वह समूह के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होता है। नेता को परिश्रम करते देख अन्य लोग भी उसका अनुसरण करते हैं। गांव में ऐसे व्यक्ति की प्रतिष्ठा अधिक होती है जो कठोर परिश्रम करता है।

(7) **कल्पनाशक्ति** (Imagination Power)—नेता में कल्पना शक्ति होना आवश्यक है। इसी आधार पर वह योजना बनाता है, उसे क्रियान्वित करता है और भविष्य में आने वाली कठिनाइयों का अन्दाज लगाकर उनका समाधान ढूंढ़ता है।

(8) **अन्तर्दृष्टि** (Foresightedness)—एक नेता में अन्तर्दृष्टि का होना आवश्यक है। इस गुण के आधार पर ही वह अपने अनुयायियों की मानसिक स्थिति का पता लगा लेता है और उसके अनुरूप अपने आचरण को बदलता है। भविष्य की परिस्थितियों का वह पहले से ही मूल्यांकन कर उनके अनुसार कदम उठाता है।

(9) **लचीलापन** (Flexibility)—अच्छा नेता वही माना जाता है जो समय एवं परिस्थितियों के अनुरूप अपने को ढाल ले। नवीन परिस्थितियों के अनुसार आचरण में परिवर्तन करना सफल नेतृत्व के लिए आवश्यक है अन्यथा वह रूढ़िवादी और परिवर्तन विरोधी माना जाता है।

(10) **उद्दीपकता** (Surgency)—एक नेता को कुशल, प्रफुल्ल, कार्य करने के लिए तत्पर, स्पष्टवादी, मौलिक, प्रसन्नचित्त, उत्साही एवं स्फूर्ति वाला होना चाहिए।

उपर्युक्त सभी सामान्य गुणों की उपस्थिति एक सफल नेता के लिए आवश्यक है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि नेता में इनके अतिरिक्त और कोई गुण नहीं होने चाहिए अथवा जिनमें ये सभी गुण होंगे, वह आवश्यक रूप से नेता बनेगा ही। यदि समय एवं परिस्थितियों से उपर्युक्त विशेषताएं रखने वाले व्यक्ति का मेल हो जाता है तो उसके नेता बनने की पूरी-पूरी सम्भावना रहती है।

नेतृत्व के प्रकार
(TYPES OF LEADERSHIP)

नेतृत्व की उत्पत्ति, नेता के व्यवहार तथा नेता एवं अनुयायियों की बीच पाये जाने वाले सम्बन्धों के आधार पर नेताओं के अनेक प्रकार देखने को मिलते हैं। हम यहां कुछ प्रकार के नेताओं का उल्लेख करेंगे :

1. एफ. सी. बार्टलेट का वर्गीकरण (Classification of F. C. Bartlett)

बार्टलेट ने नेताओं के तीन प्रकार बताये हैं :

(i) **संस्थात्मक नेता**—यह किसी संस्था का प्रशासक अथवा मैनेजर होता है। ऐसे नेता की सत्ता परम्परा, प्रथाओं, मन्दिर, चर्च, मस्जिद, स्कूल अथवा आर्थिक व्यवस्था पर आधारित होती है।

(ii) **प्रभुत्वशाली नेता**—ऐसा नेता आक्रामक दबाव रखने वाला और कठोर कार्यवाही करने वाला होता है।

(iii) **हृदयग्राही नेता**—ऐसा नेता शब्दों एवं संकेतों के द्वारा अपना नियन्त्रण कायम रखता है। वह चापलूसी, झुकाव एवं मौखिक सलाह का प्रयोग भी करता है।

2. किम्बाल यंग द्वारा नेता का वर्गीकरण (Classification of Leaders by Kimball Young)

यंग[1] ने सात प्रकार के नेताओं का उल्लेख किया है :

[1] Kimabll Young, *Hand Book of Social Psychology*, pp. 272-74.